विस्तृत रूपरेखा

I. पवित्रता को प्राप्त करना (1-16)
   A. चढ़ावों के द्वारा (1-7)
      1. होमबलियाँ (1:1-17)
         a. नियमों का स्त्रोत (1:1, 2)
         b. झुण्ड के पशुओं में से होमबलि (1:3-9)
            (1) झुण्ड के पशुओं के बलि की तैयारी (1:3-6)
            (2) झुण्ड के पशु का बलि किया जाना (1:7-9)
         c. गल्ले के पशुओं में से होमबलि (1:10-13)
         d. पक्षियों की होमबलि (1:14-17)
      2. अन्न बलियाँ (2:1-16)
         a. बिना पके अन्न की बलि (2:1-3)
         b. पकाए गए अन्न की बलि (2:4-10)
         c. अन्न बलियों से संबंधित विशेष नियम (2:11-16)
            (1) अन्न बलियों के साथ की वस्तुएँ/मसाले (2:11-13)
            (2) पहली उपज से अन्न बलि (2:14-16)
      3. मेल बलियाँ (3:1-17)
         a. झुण्ड के पशुओं में से मेल बलि (3:1-5)
         b. गल्ले के पशुओं में से मेल बलि (3:6-17)
            (1) भेड़ों में से (3:6-11)
            (2) बकरियों में से (3:12-17)
      4. पाप बलियाँ (4:1-5:13)
         a. पाप बलियों से संबंधित नियमों का स्त्रोत (4:1, 2)
         b. विभिन्न समूहों के लिए पाप बलियाँ (4:3-35)
            (1) अभिषिक्त याजक के लिए: एक बछड़ा (4:3-12)
            (2) मण्डली के लिए : एक बछड़ा (4:13-21)
            (3) प्रधान पुरुष के लिए: एक नर बकरा (4:22-26)
            (4) साधारण लोगों के लिए: एक बकरी (4:27-31)
            (5) साधारण लोगों के लिए: एक भेड़ी का बच्चा (4:32-35)
         c. पाप जिनके लिए पाप बलि की आवश्यकता है (5:1-6)
         d. निर्धन लोगों के लिए पाप बलि: पक्षी (5:7-10)
         e. बहुत अधिक निर्धन लोगों के लिए पाप बलि: मैदा

(5:11-13)

5. दोष बलियाँ (5:14-6:7)
    a. दोष बलियों से संबंधित नियमों का स्त्रोत (5:14)
    b. परमेश्वर की "पवित्र वस्तुओं" के विरुद्ध पाप के लिए दोष बलियाँ (5:15, 16)
    c. क्षतिपूर्ति योग्य अन्य पापों के लिए दोष बलियाँ (5:17-19)
    d. अन्य लोगों की संपत्ति से सम्बन्धित पापों के लिए दोष बलियाँ (6:1-7)
6. याजकीय नियम (6:8-7:36)
    a. होम बलियाँ: याजकों का उत्तरदायित्व (6:8-13)
    b. अन्न बलियाँ: याजकों का उत्तरदायित्व (6:14-23)
        (1) अन्न बलियाँ: याजकों का भाग (6:14-18)
        (2) अन्न बलियाँ: महायाजक द्वारा चढ़ाई जाएँ (6:19-23)
    c. पाप बलियाँ: याजकों का उत्तरदायित्व (6:24-30)
    d. दोष बलियाँ: याजकों का उत्तरदायित्व (7:1-7)
    e. याजकों के उत्तरदायित्व पर दो परिशिष्ट (7:8-10)
        (1) परिशिष्ट 1: होम बलि में याजकों का भाग (7:8)
        (2) परिशिष्ट 2: अन्न बलि में याजकों का भाग (7:9, 10)
    f. मेल बलियाँ: याजकों का उत्तरदायित्व (7:11-36)
        (1) परिचय (7:11)
        (2) तीन प्रकार की मेल बलियाँ (7:12-18)
        (3) याजकों के लिए निषिद्ध संबंधी (7:19-27)
            (a) अशुद्धता संबंधी निषेद्ध (7:19-21)
            (b) चर्बी और लहू से संबंधित निषेद्ध (7:22-27)
        (4) याजकों के लिए अनुमति प्राप्त प्रावधान (7:28-36)
            (a) मेल बलियों में से याजक का भाग (7:28-34)
            (b) मेल बलियों में से याजक का भाग: एक सारांश (7:35, 36)
7. एक सारांश (7:37, 38)

B. अभिषिक्त याजकीय व्यवस्था के द्वारा (8-10)
1. सात दिन तक याजकीय अभिषेक (8:1-36)
    a. अभिषेक अनुष्ठान के तैयारी (8:1-5)
    b. हारून को महायाजकीय वस्त्र पहनाना (8:6-9)
    c. निवास स्थान और याजकों का अभिषेक (8:10-13)
    d. अभिषेक का अनुष्ठान (8:14-30)
        (1) बछड़े का पाप बलि चढ़ाया जाना (8:14-17)
        (2) पहले मेढ़े का होम बलि चढ़ाया जाना (8:18-21)
        (3) दूसरे को संस्कार का मेढ़ा चढ़ाया जाना (8:22-29)

(4) हारून और उसके पुत्रों को का तेल और लहू से अभिषेक (8:30)

e. अगले सात दिनों के लिए निर्देष (8:31-36)

2. आठवें दिन अभिषेक का पूरा होना (9:1-24)

a. बलि के लिए तैयारियाँ (9:1-7)

(1) हारून के लिए निर्देष (9:1-4)

(2) सारी मण्डली के सम्मुख निर्देष (9:5-7)

b. चढ़ावों की बलि (9:8-21)

(1) याजकों के लिए चढ़ावे (9:8-14)

(a) पाप बलि (9:8-11)

(b) होम बलि (9:12-14)

(2) लोगों के लिए चढ़ावे (9:15-21)

(a) पाप बलि, होम बलि, और अन्न बलि (9:15-17)

(b) मेल बलियाँ (9:18-21)

c. परिणाम: यहोवा से आशीर्वाद (9:22-24)

3. याजकीय विफलताएँ (10:1-20)

a. प्रथम विफलता: "ऊपरी आग" अर्पित करना (10:1-15)

(1) नादाब और अभिहू का पाप, और उसका दण्ड (10:1-3)

(2) उनकी मृत्यु से संबंधित व्यवहार (10:4-7)

(3) याजकों के लिए निर्देष (10:8-15)

b. दूसरी विफलता: बिना खाई गई पाप बलि (10:16-20)

C. शुद्ध और अशुद्ध में भिन्नता करने के द्वारा (11-15)

1. भोजन से संबंधित नियम: शुद्ध और अशुद्ध पशु (11:1-47)

a. भोजन योग्य पशुओं की पहचान करना (11:1-23)

(1) पशु (11:1-8)

(2) मछलियाँ (11:9-12)

(3) पक्षी (11:13-19)

(4) पंख वाले कीट (11:20-23)

b. अशुद्ध होना और उससे व्यवहार (11:24-40)

(1) अशुद्ध पशुओं से संपर्क द्वारा (11:24-28)

(2) अशुद्ध जीवों से संपर्क द्वारा (11:29-38)

(3) शुद्ध पशु की लोथ से संपर्क के द्वारा (11:39, 40)

c. आवश्यकताओं का कारण: पवित्रता (11:41-45)

d. सारांश (11:46, 47)

2. अशुद्धता और बच्चे जनना (12:1-8)

a. बच्चा जनने के कारण माँ की अशुद्धता (12:1-5)

b. माँ की अशुद्धता के निवारण के लिए आवश्यक बलिदान

(12:6-8)

3. कोढ़ की अशुद्धता (13:1-14:57)
   a. कोढ़ी लोग (13:1-46)
      (1) सामान्य निर्देश (13:1-8)
      (2) स्थिति 1: चर्म में सूजन (13:9-17)
      (3) स्थिति 2: चर्म में फोड़ा (13:18-23)
      (4) स्थिति 3: चर्म में जलने का घाव (13:24-28)
      (5) स्थिति 4: सर या दाढ़ी में व्याधि (13:29-37)
      (6) स्थिति 5: उजले दाग (13:38, 39)
      (7) स्थिति 6: चंदुले सर पर व्याधि (13:40-44)
      (8) कोढ़ के परिणाम (13:45, 46)
   b. वस्त्र में कोढ़ (13:47-59)
   c. पूर्व कोढ़ी के शुद्धिकरण की प्रक्रिया (14:1-32)
      (1) आवश्यक रीतियाँ (14:1-9)
      (2) आवश्यक बलिदान (14:10-20)
      (3) दरिद्रों के लिए प्रावधान (14:21-32)
   d. घर का कोढ़ (14:33-53)
      (1) निरीक्षण और उपचार (14:33-42)
      (2) असाध्य स्थिति (14:43-47)
      (3) स्वच्छ करने की रीतियाँ (14:48-53)
   e. सारांश: कोढ़ की नियम संहिता (14:54-57)
4. शरीर के अशुद्ध स्राव (15:1-33)
   a. पुरुष की अशुद्धता (15:1-18)
      (1) पुरुष के प्रमेह के कारण अशुद्धता (15:1-12)
      (2) पुरुष के प्रमेह से शुद्धिकरण (15:13-15)
      (3) पुरुष के सामान्य स्खलन द्वारा अशुद्धता (15:16-18)
   b. स्त्री की अशुद्धता (15:19-30)
      (1) स्त्री की सामन्य ऋतुमती होने की अशुद्धता (15:19-24)
      (2) स्त्री के "अधिक दिन तक" रुधिर बहने के कारण अशुद्धता (15:25-30)
   c. सारांश (15:31-33)

D. प्रायश्चित के दिन को मनाने के द्वारा (16)
1. निर्देशों की पृष्ठभूमी (16:1)
2. दिवस का पूर्वावलोकन (16:2-10)
   a. महा-पवित्र स्थान में प्रवेश करने के लिए सावधानियां (16:2)
   b. चढ़ावों के लिए तैयारी (16:3-5)

c. चढ़ावों का प्रस्तुत किया जाना (16:6-10)

3. प्रायश्चित करना(16:11-28)
   a. महायाजक और उसके घराने के लिए प्रायश्चित (16:11-14)
   b. लोगों और निवास स्थान के लिए प्रायश्चित (16:15-19)
   c. प्रायश्चित के बकरे की रीति: राष्ट्र के पापों का हटाया जाना (16:20-22)
   d. समापन के बलिदान: एक होमबलि और एक पापबलि (16:23-28)
4. नियम को स्थायी बनाना (16:29-34)

II. पवित्रता का आचरण रखना (17-27)

A. परमेश्वर के नैतिक एवँ धार्मिक नियमों को मानने का व्यक्तिगत उत्तरदायित्व (17-20)

1. लहू के पवित्रता को पहचानना (17:1-16)
   a. परिचय (17:1, 2)
   b. पालतू पशुओं को बलिदान चढ़ाना (17:3-9)
   c. लहू को खाना वर्जित (17:10-12)
   d. शिकारियों द्वारा जंगली पशुओं को अहेर करना (17:13, 14)
   e. अन्य कारणों से मरने वाले पशु (17:15, 16)
2. परमेश्वर के नैतिक नियमों का निर्वाह (18:1-20:27)
   a. वर्जित यौन संबंधों से बच कर रहना (18:1-30)
      (1) नियमों का स्त्रोत और औचित्य (18:1-5)
      (2) संबंधियों के साथ यौन संबंध वर्जित (18:6-18)
         (a) कौटुम्बिक व्यभिचार के विरुद्ध नियम (18:6)
         (b) कौतुम्भिक व्यभिचार की परिभाषा (18:7-18)
      (3) अन्य वर्जित यौन संबंध (18:19-23)
         (a) स्त्री की ऋतु के समय यौन संबंध (18:19)
         (b) पड़ोसी की पत्नी के साथ यौन संबंध (18:20)
         (c) मूर्तिपूजक व्यवहार वर्जित (18:21)
         (d) समलैंगिक यौन संबंध (18:22)
         (e) पशु के साथ यौन संबंध (18:23)
      (4) अनाज्ञाकारिता के लिए निर्धारित दण्ड (18:24-30)
   b. परमेश्वर के नियमों का पालन (19:1-37)
      (1) परिचय: नियमों का देने वाला (19:1, 2)
      (2) सभी आज्ञाओं को मानना (19:3-10)
      (3) अपने संगी मनुष्यों से प्रेम रखना (19:11-18)
      (4) राष्ट्र की विशिष्टता को बनाए रखना (19:19-37)

c. परमेश्वर के नियमों के उल्लंघन के दण्ड को समझना (20:1-27)
(1) मानव बलि के पाप का दण्ड (20:1-5)
(2) मृत्यु दण्ड के योग्य अपराध (20:6-16)
(3) अन्य दण्ड के योग्य अपराध(20:17-21)
(4) परमेश्वर के नियमों को मानने का आग्रह (20:22-27)

B. याजकों से संबंधित नियम (21; 22)
1. याजकों के लिए नियम (21:1-9)
2. महायाजक के लिए नियम (21:10-15)
3. याजक को सेवा के अयोग्य ठहराने वाले नियम (21:16-24)
4. बलिदानों के विषय याजकों को निर्देश (22:1-33)
a. याजकीय भाग को खाने की अनिवार्यता (22:1-16)
(1) अनुष्ठान संबंधी शुद्धता (22:1-9)
(2) याजकीय परिवार का होना (22:10-16)
b. बलिदानों के लिए अनिवार्यता: निर्दोष पशु (22:17-25)
c. बलिदानों से संबंधित अतिरिक्त आवश्यकताएं (22:26-30)
d. उपसंहार (22:31-33)

C. पवित्रता को बढ़ावा देने का राष्ट्र का उत्तरदायित्व (23-25)
1. परमेश्वर द्वारा "निर्धारित पर्वों" को मानने के द्वारा (23:1-44)
a. परिचय (23:1, 2)
b. सब्त का दिन (23:3)
c. फसह और अखमीरी रोटी का पर्व (23:4-8)
d. पहली उपज की भेंट (23:9-14)
e. विश्राम दिनों का पर्व (23:15-22)
f. नरसिंगों का पर्व (23:23-25)
g. प्रायश्चित का दिन (23:26-32)
h. झोंपडियों का पर्व (23:33-44)
2. परमेश्वर की पवित्रता की रक्षा के द्वारा (24:1-23)
a. निवास स्थान के लिए याजकों के दायित्व (24:1-9)
(1) निवास स्थान के दीपकों का दायित्व (24:1-4)
(2) पवित्र स्थान में मेज़ पर रोटी का दायित्व (24:5-9)
b. ईश्वर-निन्दा के विरुद्ध चौकसी (24:10-23)
(1) ईश्वर-निन्दा का पाप किया गया (24:10-12)
(2) पाप के लिए निर्धारित दण्ड (24:13-16)
(3) अन्य गलतियों के लिए निर्धारित दण्ड (24:17-22)
(4) ईश्वर-निन्दा का दण्ड दिया गया (24:23)
3. विश्रामवर्ष और जुबली का वर्ष मानने के द्वारा (25:1-55)
a. विश्रामवर्ष (25:1-7)

b. जुबली का वर्ष (25:8-55)
(1) परिभाषा और विवरण (25:8-12)
(2) आधारभूत नियम (25:13-17)
(3) आज्ञाएँ और प्रतिज्ञाएँ (25:18-22)
(4) जुबली व्यवस्था से संबंधित नियम (25:23-55)
(a) भूमि बेचना (25:23-28)
(b) घर बेचना (25:29-34)
(c) कंगाली के प्रति व्यवहार और दासत्व को रोकना (25:35-38)
(d) दासत्व के प्रति व्यवहार (25:39-46)
(e) कंगालों को छुड़ाना (25:47-55)

D. पवित्र आचरण निभाने के कारण: आशीष और श्राप (26)
1. वाचा की आधारभूत आवश्यकताएँ (26:1, 2)
2. आशीषें (26:3-13)
a. बहुतायत की उपज (26:3-5)
b. सुख-चैन का अस्तित्व (26:6-8)
c. जनसंख्या में वृद्धि और भोजन की बहुतायत (26:9, 10)
d. परमेश्वर की उपस्थिति (26:11-13)
3. श्राप (26:14-43)
a. निर्दिष्ट श्राप (26:14-39)
(1) बीमारी, उपज में विफलता, और पराजय (26:14-17)
(2) अकाल और उसके परिणाम (26:18-20)
(3) वन पशुओं की विपत्ति (26:21, 22)
(4) युद्ध, मरी, और भुखमरी (26:23-26)
(5) विनाश, तितर-बितर होना, और उजाड़ होना (26:27-33)
(6) अंतिम दण्ड: बंधुवाई और निर्जनता (26:34-39)
b. पश्चाताप की संभावना (26:40-43)
4. अपने लोगों का त्याग न करने की परमेश्वर की प्रतिज्ञा (26:44, 45)
5. अंतिम शब्द (26:46)

E. पवित्रता के प्रमाण: संकल्प और मूल्याँकन (27)
1. परमेश्वर को समर्पित लोगों का मूल्याँकन (27:1-8)
2. परमेश्वर को समर्पित पशुओं का मूल्याँकन (27:9-13)
3. परमेश्वर को समर्पित संपत्ति का मूल्याँकन(27:14-25)
4. बिना संकल्प की भेंटें (27:26-33)
5. सारांश (27:34)